Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

प्रयागराज महाकुंभ-2025: मानवता की एक अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर

डॉ देवेन्द्र प्रताप सिंह
पूर्व शोध छात्र, भूगोल विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ उ०प्र०

Article Info
Volume 8, Issue 3
Page Number : 01-04

Publication Issue :
May-June-2025

Article History
Accepted : 01 May 2025
Published : 05 May 2025

सारांश :– विश्व का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण आध्यात्मिक व सांस्कृतिक समागम महाकुंभ 2025, 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक आयोजित किया गया। इस मेले ने कई देशों के करोड़ों तीर्थ यात्रियों व आगंतुकों को आकर्षित किया। इस महाउत्सव का आयोजन प्रयागराज के त्रिवेणी संगम (गंगा–यमुना–सरस्वती) के तट पर किया गया। इस बार महाकुंभ का संयोग 144 वर्ष बाद देखने को मिला। कुंभ मेले की उत्पत्ति से संबंधित जानकारी हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित है। ह्वेनसांगके अनुसार राजा हर्षवर्धन के काल से कुंभ का प्रारंभ माना जाता है। प्रयागराज के संगम तट को हजारों टेंट व आश्रयो के साथ एक अस्थाई टेंट शहर में परिवर्तित कर दिया जाता है तथा श्रद्धालुओं की स्वास्थ्य संबंधित सेवाओं हेतु व्यापक चिकित्सा की व्यवस्था की गई, वहीं सुरक्षा हेतु सात स्तरीय प्रणाली के माध्यम से बेहतर सुरक्षा उपाय का क्रिवान्वयन किया गया। इस महाकुंभ में परिवहन साधनों पर जोर दिया गया तथा कई हजार बसों के परिचालन के साथ–साथ रेलवे, वायु परिवहन के साधनों में भी वृद्धि की गई, जिससे आने वाले लोगों को कोइ असुविधा न हो सकेइस महाकुंभ में सामाजिक व स्वास्थ्य कल्याण पर विशेष ध्यान दिया गया । इन 45 दिनों के आयोजन में 66 करोड़ लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई तथा 60 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिला। इस आयोजन का प्रभाव तत्कालिक व भविष्यगामी होगा, जिससे पर्यटन व रोजगार पर व्यापक प्रभाव देखने को मिलेगा।

बीजशब्द :– अमूर्त, सांस्कृतिक धरोहर, कल्पवास, आध्यात्मिक, सामाजिक आर्थिक, स्वच्छता, वेदाध्ययन, समावेशी, श्रद्धालु, स्टार्टअप, शाही स्नान।

भूमिका :– महाकाव्य और पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन के पश्चात् निकले अमृत कलश से पृथ्वी के चार स्थान यथा–हरिद्वार(गंगा नदी), त्रिवेणी संगम तट(प्रयाग), उज्जैन (क्षिप्रा नदी), और नासिक (गोदावरी नदी) में अमृत की बूंदे बाहर गिरी, वहां कुंभ पर्व मनाया जाता है। केवल प्रयागराज में कुंभ को

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

पूर्ण कुंभ– महाकुंभ (12 वर्ष बाद) कहा जाता है, जबकि अर्धकुंभ (6 वर्ष बाद) हरिद्वार और प्रयाग में तथा नासिक और उज्जैन में आयोजित कुंभ को सिंहस्थ कुंभ कहते हैं। प्रयागराज में आयोजित कुंभ विश्व का एकमात्र शहर जो 45 दिनों के लिए टेंट सिटी के रूप में परिवर्तित हो जाता है, जिसमें पौष पूर्णिमा से लेकर माघी पूर्णिमा तक कल्पवास का रिवाज प्राचीन काल से अनवरत चल आ रहा है, इस एक माह की अवधि में कल्पवासी आत्म शुद्धि हेतु वेदाध्ययन और ध्यान करते हैं तथा सभी सांसारिक मोह माया का त्याग कर अपना जीवनयापन करते है।

महाकुंभ हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का जीवंत प्रतीक है। यह अद्वितीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयोजनों का केंद्र है। भारत के इस महापर्व को वर्ष 2017 में यूनेस्को ने 'मानवता की अमृत सांस्कृतिक विरासत' की संज्ञा दी। महाकुंभ 2025 में प्रयाग में आयोजित विश्व के किसी भी धर्म का सबसे बड़ा समागम हैद्य 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक आयोजित विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक व सांस्कृतिक उत्सव में 660 मिलियन से अधिक लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई। यह महाकुंभ इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि ऐसा सहयोग 144 साल बाद देखने को मिला है जिसका कारण सूर्य, चंद्र और बृहस्पति का दुर्लभ संरेख है। प्रयाग महाकुंभ, भारतीय संस्कृति की चिरंतन एवं अक्षुण्ण परंपराओं में से एक है। यह एक भारत,श्रेष्ठ भारत, समावेशी भारत की दिव्य और जीवंत झांकी है। यह एक मेला अथवा स्नान की डुबकी मात्रा न होकर भारतवर्ष की अनेकता में एकता का शाश्वत जय घोष है। महाकुंभ स्वयं की खोज, आत्मा की शुद्धि और साझा मानवता का उत्सव है। महाकुंभ 2025 में केवल प्रयागराज ही नहीं बल्कि राज्य के साथ–साथ राष्ट्रीय स्तर इसके सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहे हैं। एक ओर जहाँ भारत का वैश्विक पटल पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव पड़ा वहीं दूसरी ओर रोजगार व व्यवसाय के विकास में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहा है। इस महाकुंभ ने वैश्विक स्तर पर व्यवसायों हेतु स्टार्टअप लॉन्च पैड का कार्य किया।

प्रयागराज महाकुंभ 2025 :– दिव्य, भव्य एवं डिजिटल महाकुंभ प्रयागराज 2025 का आदर्श वाक्य "सर्व सिद्धिप्रदः कुंभः" है जिसका अर्थ है कुंभ सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करता है। ह्वेनसांग के अनुसार कुंभ का आयोजन राजा हर्षवर्धन के काल से प्रारंभ हुआ। महाकुंभ 2025 का आयोजन 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक किया गया। इस दौरान 76 देश के श्रद्धालुओं ने प्रयागराज की पावन धरती पर गंगा–यमुना सरस्वती के त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाई। महाकुंभ के बेहतर प्रशासन हेतु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1 दिसंबर 2024 को यूपी के 76वें जिले की घोषणा की, जिससे महाकुंभ मेला परिक्षेत्र कहा गया, जो मार्च 2025 तक अस्तित्व में रहेगा। इसके लिए 4000 हेक्टेयर भूमि में चार तहसील (सदर, सोरांव, फूलपुर, करछना),56 थाने तथा 76 गांव को मिलाकर बनाया गया। कुंभ मेला क्षेत्र में 41 घाटों (10 पक्के, 31 अस्थाई घाट) को निर्मित किया गया, जिससे श्रद्धालुओं के स्नान में कोई बाधा ना आ सके। महाकुंभ–2025 में 26 जनवरी से 22 फरवरी के मध्य 21 दिन ऐसे रहे, जिसमें एक करोड़ से अधिक लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई। पवित्र स्नान के दिन श्रद्धालुओं की उपस्थिति का विवरण निम्नलिखित है :–

तिथि	स्नान का अवसर	श्रद्धालुओं की संख्या
13 जनवरी 2025	पौष पूर्णिमा	1.5 करोड़
14 जनवरी 2025	मकर संक्रांति (प्रथम शाही स्नान)	3.5 करोड़
29 फरवरी 2025	मौनी अमावस्या (द्वितीय शाही स्नान)	5 करोड़
3 फरवरी 2025	बसंत पंचमी (तृतीय शाही स्नान)	2.33 करोड़
12 फरवरी 2025	माघी पूर्णिमा	2 करोड़
26 फरवरी 2025	महा शिवरात्रि	1.3 करोड़

यूपी सरकार द्वारा महाकुंभ के दृष्तिगत प्रयागराज में बुनियादी विकास हेतु 6990 करोड़ रुपए के बजट से 549 परियोजनाएं स्वीकृत की तथा एक अनुमान के अनुसार 25000 करोड़रुपए की राजस्व प्राप्ति तथा राज्य अर्थव्यवस्था पर 2लाख करोड़ रुपए का सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इस महाकुंभ में 30 लाख से ज्यादा विदेशी पर्यटक शामिल हुए तथा 40000 से अधिक सुरक्षा बल, लगभग 2700 कैमरे, 56 साइबर एक्सपर्ट की एक टीम तथा 300 गोताखोर श्रद्धालुओं की सुरक्षा हेतु समर्पित थे। स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने हेतु डेढ़ लाख शौचालय, 2500 कूड़ेदान, 160 अपशिष्ट प्रबंधन वाहन तथा 15000 से अधिक सफाई कर्मी के साथ–साथ नदी स्वच्छता हेतु तीन अस्थाई सीवेज उपचार संयंत्र लगाए गए। मेले में चार प्रकार के 50000 क्यू आर कोड लगाए गए, जिसमें लाल रंग (आकस्मिक सेवा), हरा रंग (मेला प्रशासन), नीला रंग (आवास व आहार) तथा नारंगी रंग (यू०पी०की उपलब्धियां) था। पवित्र स्नान हेतु 12 किलोमीटर लंबे पक्के घाट तथा पार्किंग हेतु 1850 हेक्टेयर भूमि के साथ–साथ 30 पान्टून पुल (3308 पीपा का प्रयोग), 67000 स्ट्रीट लाईट का प्रबंधन व रखरखाव बेहतर नियोजन से सुचारू रूप से संचालित किया गया।

सामाजिक आर्थिक स्थिति पर प्रभाव :– महाकुंभ 2025 का प्रभाव व्यापक स्तर पर देखने को मिलता है। इस आयोजन से सामाजिक स्तर पर धार्मिक और सांस्कृतिक एकता में प्रगाढ़ता देखने को मिला। भारत के हर राज्यों से श्रद्धालुओं के आगमन से सामाजिक समरसता और सद्भाव देखने को मिला तथा कई राज्यों से लोगों ने आकर रोजगार प्राप्त किए, वहीं स्वास्थ्य व स्वच्छता पर प्रशासन का विशेष जोर रहा तथा 24x7 संचालित स्वास्थ्य सेवाओं के साथ–साथ पर्यावरणीय स्वच्छता हेतु विशेष नियोजनात्मक उपाय किए गए। एक अनुमान के अनुसार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 60 लाख लोगों को रोजगार मिला, जिससे 3 लाख करोड़ का लेनदेन इस भव्य व दिव्य आयोजन से हुआ। मेला क्षेत्र में कई जगहों पर स्वास्थ्य सेवाओं का पंडाल लगाया गया तथा हजारों की संख्या में डॉक्टरों व नर्सो को अबाध रूप से सेवा हेतु लगाया गया था, किंतु अचानक जनसंख्या वृद्धि के कारण मौनी अमावस्या के दिन कई जगह भगदड़ होने से सरकारी आंकड़े के अनुसार 30 लोगों की मृत्यु हो गई थी, लेकिन फिर भी प्रशासन स्तर पर चुस्ती व मुस्तैदी से राहत कार्यों को 24x7संचालित करके एक बहुत बड़ा हादसा होने से रोका जा सका तथा उसके बाद सभी सेवाएं सुचारू रूप से संचालित होने लगी। इस महाआयोजन से लोगों में आत्म परिवर्तन और समाज में

आध्यात्मिकता का प्रसार हुआ तथा इसके माध्यम से वसुधैव कुटुम्बकम् देखने को मिला तथा कई भाषा व बोलियां का मेल मिलाप हुआ, जिससे भारतीय सामाजिक समरसता को बल मिला।

प्रयाग में आयोजित विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक समागम से जिला सहित राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं का ध्यान भारत की ओर आकर्षित हुआ। प्रयाग में इस महा उत्सव के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिले। यूपी के मुख्यमंत्री ने विधानसभा के बजट सत्र में पिंटू महरा के बारे में बताया, जिसने इन 45 दिनों में 130 नावों से 30 करोड़ की कमाई की। एक अनुमान के अनुसार 13000 नविकों ने 4500 से अधिक नावों के द्वारा 24x7इन 45 दिनों में प्रति नाविक 8–9 लाख की कमाई की, वहीं मेला क्षेत्र के आसपास के निवासियों के साथ–साथ प्रयागराज मे रह रहे अन्य जिलों के लोगों ने बाइक से प्रतिदिन 2–3 हजार रूपये की कमाई की तथा अप्रत्यक्ष रूप से भी लोगों की आर्थिक स्थिति पर व्यापक प्रभाव देखने को मिले। प्रयागराज में स्थानीय व्यापार और रोजगार में वृद्धि तथा विकास कार्यों में निवेश से जनपद की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक सुधार देखने को मिला।

निष्कर्ष :– महाकुंभ प्रयागराज सिर्फ एक धार्मिक आयोजन ही नहीं बल्कि एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था और स्टार्टअप के लिए एक लांच पैड कहा जा सकता है। इससे एक बात सिद्ध होती है की आस्था, व्यवसाय और नवाचार एक साथ मिलकर देश के विकास को गति प्रदान कर सकते हैं। इस महाकुंभ ने भारत को विश्व पटल पर एक सांस्कृतिक आर्थिक विकास के अवसर के रूप में पहचान दिलाई, जिससे विश्व के कई देशों ने इस महा उत्सव की प्रशंसा की। ऐसे उत्सव होने से किसी भी देश के सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक स्थिति के साथ–साथ वैश्विक स्तर पर आर्थिक व राजनीतिक संबंध पर अनुकूल प्रभाव देखने को मिलता है। इस महाकुंभ से न केवल आध्यात्मिक जीवन में समृद्धि बल्कि उत्तर प्रदेश में दीर्घकालिक आर्थिक विकास को गति मिलेगी।

संदर्भ

1. Up.gov.in
2. Prayagraj.nic.in
3. Kumbh.gov.in
4. Pib.gov.in
5. Sanskritiias.com
6. Hindi.news18.com
7. Amarujala.com
8. प्रयागराज मेला प्राधिकरण, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
9. सूचना एवं जनसंपर्क विभाग उत्तर प्रदेश